के अध्ययन से जो यह पता चला है कि उन का लगभग 70 प्रतिशत धन बैंकों से अतिरिक्त बाहरी सूत्रों से आता है वह कोई चिन्ता की बात नहीं है। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या रिजर्व बैंक या भारत सरकार ने इस बात का अध्ययन किया है कि पिछले बीस वर्षों में छोटी पब्लिक लिमिटिड कम्पनियों में लगे हुए धन में से कितना बैंकों से आता है और कितना अन्य सूत्रों से आता है ; यदि नहीं तो क्या इस प्रकार का अध्ययन किया जायेगा।

श्री फखरुद्दीन अली अहमद : यहां जो हिसाब दिया है उस से मालूम होता है कि बैंकों से कितना रुपया आता है और बाहर से कितना रुपया कर्ज लिया गया है इस से साफ जाहिर होता है कि जितना रुपया कर्ज लिया गया है उतने ही के डेबिट कर्ज हैं। कम्पनियों के पास जो इनवेन्टरी है और जो रुपया अदा करना है यानी डट और इक्विटी की रेशो को मिला कर देखा जाये, तो पोजीशन फेवरेबिल है।

Shri S. S. Kothari: Is the hon. Minister aware of the fact that most of the small public companies are treated, for tax purposes, as section 104 companies on which the taxes are more than on big public companies? The result is that, on this account most of the profits of these small companies are taken away by taxation and they have to rely on external sources. Woud the hon. Minister throw some light on this?

Shri F. A. Ahmed : From what has been examined by the Reserve Bank, it is evident that the balance between the assets and the liabilities either on account of borrowing or on account of external sources is not very much. So I do not think that there is any implication of the trend which the hon. Member has in mind.

Shri S. S. Kothari: I do not agree with him.

Shri Bedabarta Barrataua: A similar survey was made in regard to larger medium companies and it shows that about 58 per cent comes from external sources. In view of the fact that the external sources constitute the savings of the public, may I know whether the Government is considering the question of nationalisation of banking institutions?

Shri F. A. Ahmed: That question does not arise here.

Import of Jute

\+

*393. **Shri Sharda Nand:**
Shri J. B. Singh:
Shri Ranjit Singh:

Will the Minister of Commerce be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a large amount of foreign exchange is spent on the import of jute; and

(b) if so, the steps taken by Government to increase the production of jute in India and the time likely to be taken to be self-sufficient in this regard?

The Minister of Commerce (Shri Dinesh Singh): (a) In view of successive short crops in the country, considerable imports had to be authorised during 1965-66 and 1966-67 so as to provide adequate raw materials to a very important export oriented industry.

(b) It is proposed to raise production of jute and mesta to 110 lakh bales by 1970-71 so as to achieve self-sufficiency. The programmes include double cropping in extensive areas, introduction of high-yielding strains and adoption of intensive cultivation methods. Government have also raised the minimum support price for jute by Rs. 14 per quital for 1967-68

श्री शारदानन्द : क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि भारत में पटसन की कितनी खपत है और उस में से उन को कितना बाहर से मंगाना पड़ता है ?

वाणिज्य मन्त्री (श्री दिनेश सिंह) : जो हमारी पैदावार रही है वह मैं दो तीन साल का पिछला दे दूं . . .

श्री शारदानन्द : पहले तो डिमान्ड कितनी है यह पूछ रहा हूं ?

श्री दिनेश सिंह : डिमांड तो इस वक्त मैं दोनों को जोड़ कर बता देता हूं जो हम ने मंगाया है और जो पैदा होता है। इसीलिए मैं दोनों दे रहा था कि अलग अलग जानने से ज्यादा सुभीता होगा। 1965-66 में 56.70 लाख बेल्स पैदा हुई और 64-65 में 75.50 लाख बेल्स पैदा हुई। करीब हमारे यहां औसत पैदावार 75 लाख की रही है और डिमांड करीब 90 लाख की है।

श्री शारदानन्द : मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि पटसन के उत्पादन में कमी के कारण क्या हैं ? क्या यह सत्य नहीं है कि किसानों को उतनी उस में सुविधायें नहीं दी जा रही हैं जितनी कि उन को मिलनी चाहिए।

श्री दिनेश सिंह . सुविधा कितनी मिलनी चाहिए कितनी मिल रही है इस का अध्यक्ष महोदय हमेशा कहना मुश्किल होता है। मैं समझता हूं कि सुविधाएं और बढ़नी चाहिए। सुविधाएं और हम बढ़ा रहे हैं लेकिन मैं समझता हूं कि एक जो खास कमी का कारण रहा है पिछले सालों में वह यह है कि इतनी कम बारिश से सूखा पड़ गया।

श्री जि० ह० सिंह : मैं यह जानना चाहता हूं कि पिछले तीन वर्षों में कितने रुपये का जूट पैदा हुआ और कितने रुपये का बाहर को भेजा गया ?

श्री दिनेश सिंह : कितना पैदा हुआ वह तो दो साल का मैं बता चुका हूं। 66-67 में करीब 70 लाख बेल का पैदावार का अनुमान है। अभी पूरा नहीं आया है एस्टीमेट है, शायद 65 लाख ही हो।

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री महोदय का ध्यान थाईलैण्ड से जो जूट का आयात होता है उस की ओर गया है और उस में कुछ धांधलियां उत्पन्न हुई हैं ? जो जूट की मिल हैं उन को आप लाइसेंस देते हैं और वह रजिस्टर करवाते हैं। लेकिन बाद में जूट कन्ट्रोलर को लिखा जाता है कि जिस व्यक्ति से या जिस फर्म से यह जूट मिलने वाला था वह अपने वादे को पूरा नहीं कर रहा है तो हम को फिर से खरीदने की इजाजत दी जाय। इस बीच में दाम बढ़ जाता है। तो ज्यादा दाम खर्च कर के फिर खरीदा जाता है असल में वह खरीदते नहीं हैं बल्कि में वही फर्म ज्यादा दाम पर बेचता है और बीच का जो अन्तर है वह विदेशी मुद्रा के रूप में बाहर रह जाता है। इस तरह से मुद्रा में हमें घाटा होता है। क्या इस तरह के उदाहरणों की ओर आप का ध्यान गया है ? यदि गया है तो आप क्या कार्यवाही उसके बारे में कर रहे हैं ?

श्री दिनेश सिंह : अध्यक्ष महोदय थाईलैण्ड से हम मेस्टा मंगाते हैं। माननीय सदस्य ने जो बात कही दो तीन दिन हुए इस का जिक्र उन्होंने मुझ से किया था। मैं ने कहा था कि मैं जांच करवाऊंगा। जांच करवा रहा हूं।

श्री क० ना० तिवारी : क्या यह सही है कि 66-67 में शुरू में पटसन का भाव 60-65 रुपये मन था और जब विदेश से पटसन मंगाया गया तो वह घट कर के 40-42 पर आ गया ? तो मैं यह जानना चाहता हूं कि जब यहां पटसन काफी मात्रा में था तो उस भाव पर क्यों नहीं खरीदा गया और जो दूसरे देशों से मंगाया गया उस की क्या कीमत दी गई और यहां का जो पटसन है उस की क्या कीमत रखी गई ?

श्री दिनेश सिंह : अध्यक्ष महोदय अगर यहां पर काफी होता तो बाहर से मंगाने की कोई आवश्यकता नहीं होती। मैंने अर्ज किया

कि काफी न होने की वजह से हम को बाहर से मंगाना पड़ता है। जहां तक उस के दाम का सवाल है जो बाहर से जूट आया है वह महंगा पड़ता है और उस को हम सपोर्ट प्राइस देते हैं। कितना हमारा जूट का दाम है वह बदलता रहता है जैसा कि अभी माननीय सदस्य ने कहा वह गिर कर नीचे आ गया।

Shri P. R. Thakur: How much jute is imported from Pakistan?

Shri Dinesh Singh: The House knows that Pakistan does not have any trade with us; they have banned trade with India. Therfore, we are not importing directly from Pakistan.

Shri Jyotirmoy Basu: The shortfall in jute production has been exaggerated by vested interests. This is proved by the fact that jute prices are coming down. What we are importing from Thailand is not jute, but mesta which is C grade jute in which the rejection in the process of manufacture is more than 20 per cent compared to 7 per cent in our Indian jute. Under the circumstances, may I ask how much high-quality jute has been imported through London firms and why has this business not been entrusted to the STC?

Shri Dinesh Singh: Jute has been imported largely by mills directly as also by some importers. We did not canalise it through the STC because it was felt it would be more convenient to have the mills import it directly.

Shri Jyotirmoy Basu: How much jute has been imported through London firms? A lot of jute comes that way and there is the question of over-invoicing also.

Shri Dinesh Singh: I am afraid I have not got the breakup of import through London firms.

Shri S. R. Damani: The jute we are importing is of superior quality. What steps have we taken or are going to take to grow that quality of jute in our country to meet our requirements?

Shri Dinesh Singh: We are giving to the farmers better quality jute seeds to grow; we are also giving them more support price so that they can switch over from the poorer quality to the better quality.

Shri S. R. Damani: How far have we succeeded and to what extent has this dispensed with the need to import that type of jute?

Shri Swell: Is it a fact that in the first half of 1966 Pakistan exported 1,10,000 tonnes of sacking whereas we exported only 79,000 tonnes. If so, was drought the only factor behind this awful performance of ours or there are other factors as well?

Shri Dinesh Singh: I am told it is the major factor.

Mr. Speaker: Next question.

Shri Bibhuti Mishra: This is a very important question.

Mr. Speaker: The other one is also important.

Shri S. S. Kothari: I would suggest that question No. 405 may also be taken up with Q. 394.

Mr. Speaker: Yes.

Tea Export Promotion Committee

+

*394. **Shri Vasudevan Nair:**
Shri C. Janardhanan:
Shri P. C. Adichan:
Shri Yashpal Singh:

Will the Minister of Commerce be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Tea Export Promotion Committee has made several suggestions for the promotion of tea export;

(b) if so, the main features thereof; and

(c) the action taken thereon?

The Minister of Commerce (Shri Dinesh Singh): (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House. [*Placed in Library. See* No. LT-565/67].